ना जाने किसने काटी | By Mukesh Bagda

ना जाने किसने काटी
किसने पेंच लड़ाया जी
कटी पतंग मेरे दिल की
मैं तो समझ ना पाया जी
ले गया श्याम उठा के
गिरी खाटू में जाके
गिरी खाटू में जाके

ना जाने कब डोर फँसी
लाख संभाले न सम्भली
जितनी सुलझानी चाही
उतनी ही ज़्यादा उलझी
उसकी कोई खता नहीं
उसने कुछ भी किया नहीं
देखा था बस मुस्का के
गिरी खाटू में जाके
गिरी खाटू में जाके

ऐसा डूबा प्यार में उसकी
मुझको अपना होश नहीं
पाँव राखु जिस चौखट पर मैं
श्याम नज़र आता है वहीँ
पागल हो गया प्यार में उसके
कुछ भी नज़र ना आता है
थामेगा कब वो आके
गिरी खाटू में जाके
गिरी खाटू में जाके

पतंग थी मेरे दिल की ये तो
इसका कोई मोल ना था
पर नैनो की डोरी फेंके
बैठा माखन चोर था
पेंच लड़े जब नैनो के
बस मैं तो सब कुछ भूल गया
होश रहा ना उसे पाके
गिरी खाटू में जाके
गिरी खाटू में जाके

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%a8%e0%a4%be-%e0%a4%9c%e0%a4%be%e0%a4%a8%e0%a5%87-%e0%a4%95%e0%a4%b8%e0%a4%bf%e0%a4%a8%e0%a5%87-%e0%a4%95%e0%a4%be%e0%a4%9f%e0%a5%80-by-mukesh-bagda/